

श्रीहरिनीजयेऽन्यद्यमग ॥५॥ पाचवा
श्रीद्वादृपिमन्तुष्टु व तायनमः ॥



"Joint Project of the Ratnawade Sanskrut Mandal, Dhule and the Yashwant Patil Sahay Chavala
Publisher, Mumbai."

१

११

॥ अध्या ॥ ५ ॥

(2)

श्रीगणेशायनम् ॥ः श्रीस्त्रियानाथायनम् ॥ जयजयजगद्वाकुन्दकं
ससशानाश्रिव्रत्यानेह ॥ सच्चितानंह श्रिष्ठुतमिष्टदा ॥ जगद्वाश्रीह
रि ॥ १ ॥ जयजयगलितक्षेद्भारवीला ॥ परमपुत्रजाजनिनिर्मला ॥ जा
नंतकोटिब्रह्मांउपाका ॥ तुज्ञिलिलाजागम्य ॥ २ ॥ नमाजनंगृहनाश्रीय
जानंग ॥ सक्तव्यागांगुलिचाक्षकावीर्णगा ॥ निविकारानिरद्वद्भाकुर्हा
जह्येयजाव्यंगजागहुत ॥ ३ ॥ नमामादिकारणा ॥ जयद्वनि
लयादवरक्षण ॥ जाविनारातुवृत्ताणा ॥ विशापिउनजाहड ॥ ४ ॥
चथाजाध्यासपतातथे ॥ एतनार ॥ ५ ॥ लिजगन्नाथ ॥ यद्वासकडघु
नीस्त्रियात ॥ सहदजालिन्द्रम ॥ ५ ॥ महणथारजारिहर्वल ॥ क्षगवत
बाक्षवांचविले ॥ मान्मुखुपुण्यफळासिजाले ॥ विघ्नठलतनिच
है ॥ ६ ॥ नंदनवहानहृतागाकुछि ॥ चेतनीसंगअहश्चहृगोलि ॥

(2A)

राजद्रवं द्यावयातवेचि ॥ मथुरेसीगले होते ॥ ७ ॥ आसाउतनेचे
 वेतपडले ॥ जासंभाव्यं कान्हासिनठेठ ॥ गोछिबहुतमिकोले ॥
 परिनंचलं कान्हासि ॥ ८ ॥ विश्वावंतधारथार ॥ ननिधेमंदिराबाह
 र ॥ मगबाणुनिनिष्टपाकुंटर ॥ नवउलोतयाचि ॥ ९ ॥ वृक्षदाववा
 तोडितिबेळ ॥ तेसंहस्ताचरण परालेक ॥ गावबाहेर सरणरनी
 ले ॥ बहुतकाहृष्टाणुनिया ॥ १० ॥ नीलाचम्यनर ॥ माडिघातल
 जेतथार ॥ आग्रिसीरवावचंउतित ॥ पावकवलु धावती ॥ ११ ॥ गोछि
 पाहितितवेळां ॥ अग्रिसंगेत्सुवास्यसुटला ॥ जनग्राणदेवतासकला
 वठस्तजाल्यासुवास्य ॥ १२ ॥ एक्षाटासुवास्यजाह्नुत ॥ कासयाचाजास्य
 कावित ॥ तदिषुतनेचंहृदजगन्ध ॥ क्रिडलाजातिप्रितिने ॥ १३ ॥ हरि
 सच्चितावनंहसुवासतनु ॥ जोमायातितानिषुणिभातनु ॥ जानिवि



कारण्डातनु ॥ सकलतनुचासाद्धिपै ॥ १४ ॥ जो अद्योनिसंभव
श्रीहरि ॥ जगन्नीवासलिलाभूतारि ॥ तोषुतेनंच्याहृदयमंदि
रि ॥ बांतबाल्यपुण्डिरला ॥ १५ ॥ महेणानिजान्नीसंगेसुवासयत
गेकुछिचजनजालंतटरर ॥ नंदभालाभाकस्मात् ॥ मधुरहुनतंव
छां ॥ १६ ॥ लोकिवर्तमानसारीनले ॥ बालपुर्वक्षाग्येवंचलौ ॥ नंद
सदनाभालातवेछां ॥ रक्ष ॥ समवेत ॥ १७ ॥ तायशादावे
सलिलघाघउन ॥ सहृदकृठ ॥ नयन ॥ नंदजवचिगचाधां
वोन ॥ हरिसउचलुभालंगी ॥ दनसवनिंदसदन ॥ नंदपोहंजे
वलेकुन ॥ महेणविम्रचुक्खेहान्तण ॥ उल्साहपुणनंदकरि ॥ १९ ॥ मंड
पद्मारिउभउन ॥ मेवउणसकलब्राह्मण ॥ गोमुहिरथ्येभान्वहन
उल्साहपुणमाडिला ॥ २० ॥ नंदासकेसंवाटले ॥ किंजाहजबुजतां

(3)

२ ॥
ल

॥ २ ॥

कडें लागलें ॥ किं जाम्बतं मेघवर्षले ॥ जापणावरि निजभाग्ये ॥ २१
 सरणकाळिं सुधारस जाडला ॥ किं जानंहाचाध्वजउभारिला ॥ नुंद
 ब्राह्मनंदुधाला ॥ तोत्ताहवानवर्णवे ॥ २२ ॥ कवालं कंसासवतेमा
 न ॥ पुतनापावलि माक्षसदन ॥ दचककंकंसाचंमन ॥ अयेकरुनिया
 पिला ॥ २३ ॥ मणीम्हणोकायकलविवर ॥ वैरि हातोंहुकुहुकुथोर
 पेटचालिलावश्चान्नर ॥ मग ॥ विश्वविनां ॥ २४ ॥ वोटक्षयरो
 गलागला ॥ काळुसपे गीविते ॥ उ ॥ जायुष्यं वृक्षकडाडि
 ला ॥ उभगेन पेडल जाती ॥ २५ ॥ वोटमहाविधं आगकरपलं ॥
 गेमकाळे बोलाउं धाडिले ॥ माझ्याबवळं सिधुचें जब्बाडलं ॥
 निस्तेज जालंसवंगि ॥ २६ ॥ जात्ता गाकुछि नंदमंदिरि ॥ हनिनि
 जलाभाजघरि ॥ तोकलथलासव्यं जागावरि ॥ अंकरिरागावया ॥ २७ ॥

लोनाराव राजावाडे

यकाजागावरिकल्थला ॥ नंदेउत्साहथारकला ॥ वस्त्रं जुषणं दिज
कुंडा ॥ वाहिताजालानंदपं ॥ २८ ॥ येके दिवसि ब्रातः काळी ॥ सुर्य
हर्षणकरविलें वनमाठि ॥ आगणि निज विलात यवछि मायाद
विवितिनं ॥ २९ ॥ चिमणा चिघातलात व्यक् ॥ वरिपहु उलावकु
ठ नायेक ॥ उदारावरिसुररप ॥ वस्त्रं ज्ञाकिं येशोदा ॥ ३० ॥ जगा
चेंकवच जगजिवन ॥ साथ ॥ लिपाधनण ॥ टैसात्तच्छा
आगणि निज उन ॥ मायागणि चत ॥ ३१ ॥ नंदेगलाबोहरी आग
णियेकला चिश्रीहरि ॥ तोशकटुतुरुदाच्यारि ॥ कंसतयापाटवित
॥ ३२ ॥ कंसात्तद्यणतकदासुर ॥ मिंदु ज्ञात्रात्रुवधिनत्तचार ॥ मिंग
जा हांउनीदुधर ॥ जेपननंदजांगणी ॥ ३३ ॥ हृष्ण आगणी क्रिड
तं ॥ वरिलाठन आवचितं ॥ कौसं टैसं अंकतां ॥ गौरविलाहु नसा ॥ ३४ ॥

(4)

३

॥ ३ ॥

तो

तो अंगणी उपत्त पं वेउनी ॥ जपत होतां पाप रवाणी ॥ येकांतदेन्द्रुनि तेष्म
 णी ॥ घट्टा वरि लोटला ॥ ३५ ॥ सरसावान वेठं सवंग ॥ रगड़ पोहं हरि
 चें जांग ॥ जवलियै तांश्री नंग ॥ चरणज्ञाडिला आवलिला ॥ ३६ ॥ नगम
 स्तकि पड़े वज्र चुर होउनि जायस्य मग ॥ तैसरचरण धातं राकटासुर
 पिट केला हरि ने ॥ ३७ ॥ लाग तो हरि चरण वहार ॥ ब्राणस्य डिस्य कृत
 सुर ॥ उद्दरि लादै सुदुरा चार ॥ त्यव भगंग वते ॥ ३८ ॥ ऊवि केला
 जा हृलं छार ॥ आताचर पि लाला करासुर ॥ गाडयत्वं जाल
 चुर ॥ मिथोलं सैक व्यगाकि जान ॥ नमायाबोहेरपातलि ॥ ३९ ॥ नद जाल
 बाहरन ॥ तो गाडयो चो जाले चुरण ॥ मिथोलं सक व्यगोक्षी जय ॥ आ
 श्रीकरितीतं धवां ॥ ४० ॥ महणति केचा गाडा कोण आणि ला ॥ बालास्यभी
 पचुण जाला ॥ जनिजास तांवरि लोटला ॥ तरितरि काहि तुरती ॥ ४१ ॥

(4P)

सुदरि
नंदमहणयेशादृलागुणा विद्येतांतिधन्द्यावरि दुंसासीनवि
सबंजाहारात्री हहईधरिसर्वथी ४२ आसनिशायनिक्षाजनी
विसबोनकोचकपाणी जागटतीक्षुप्रित्यग्री विसरसीहोहनि
ते ४३ इक्षिताकाटितांतुसरीतं विसरनकोचन्द्रानाथा
येशादृसीतेकतां परमन उ ४४ परिगाडाकवण्यथ
चुरकला कोन्हासीनकव लालाक्षण्या जासोजांगयीसांवंडा
रंगांलागला हुक्कुहुक्कु ४५ लिंगहुक्कुहुक्कुवनमाथी
हाढुनलोले जागणिधुक्कि बवारामहि जालाजवळि रेवंलाव ॥ ४
यापाटिरात्रा ४६ साक्षात् त्राषनारायण तेहे याहववंशी
बलिनामचन्द्रा गोक्खंगणीहाघंडण रंगतातीकेतुके ४७
येकगोरायेकशामवर्ण किंयेकविष्णुयेकमदनहहन तेसं



"Painting of Rishabhdev (Shantideva), the founder of Jainism, holding a kamandalu and a kamala. This painting is part of the 'Rain in the Rainy Season' series, featuring portraits of various Jain Tirthankaras and their symbols."

रागतीहोधंजण ॥ चरणीनेपुरंतणक्षुयती ॥ ४८ ॥ दोधंलोछति
नंदगणी ॥ जैसेउडपतिआणीदिनमनि ॥ दोधंहिष्ठुलिधंउनि ॥
जावब्रामाजिघालिती ॥ ४९ ॥ द्युकीनभरलंआगवइन ॥ हसती
यकाकडंयकपाहुन ॥ ज्ञककतीलदुदरान ॥ आकर्णनयन
दोधाचं ॥ ५० ॥ किंतंदोधंधावरिगांवर ॥ दोधंहिडालतीसकु
मार ॥ किततपस्थिनीविकर ॥ नदगिरामालं ॥ ५१ ॥ येद्वाहाब
गिरांहीणि ॥ येउनपाहतीजाजायी ॥ तांदोधंदोधीकडंधावा
नि ॥ हसतचिपतलं ॥ ५२ ॥ मातननालुग्रु ॥ नथ्यमीटिघाली
घनारीक ॥ वरिकरनीसुनवकमव ॥ गहगहाहासतत्सं ॥ ५३ ॥ द्युकी
नेभरलंनिजंग ॥ मातनंउचलिलान्सवेग ॥ एष्ट्रिंसुनंहशीरंग ॥ हृद
ईदंठधरियला ॥ ५४ ॥ पहुरपुसीलिद्युलि ॥ मातनंचक्षत्विंहनवी
लोकीवनमालि ॥ घन्ययेद्वाहावलहुलि ॥ चुंबनहेतहरिते ॥ ५५ ॥

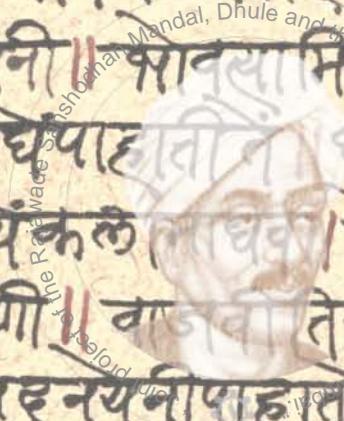
आगे



Joint Project of
Santoshchandran Mandar, Dhule and the
Vishwakarma Chavhan Pratisandhi
Mumbai

श्वरेनारायण उचलीले ॥ दोधगं हातनेडनेसा डिले ॥ तोगोक्षणीपात
क्ष्यातवेळे ॥ नवेळावयात्वस्थाते ॥ ४६ ॥ तोश्रीरंगहुडहुडाध्यावत ॥
रांगतांबेसुनपिलंगत ॥ न्सेवचिबचिरामाकडं पाहात ॥ गहगहाहास
तीदोधेंजय ॥ ५७ ॥ आकणीनेतकाकुडले ॥ केठिवागनरवपदकरा
करले ॥ वांकीमनगटयाचिदत्त ॥ ५८ ॥ जळकतातीमुद्रीक ॥ ५९ ॥
कटिजळकंकविसुत्र ॥ हुहुधु ॥ नकिणीतसुखर ॥ जन्मावहस्त
तिगहिवर ॥ सुहमज्ञवाल ॥ ६० ॥ नेपुरेत्तथाझु ॥ गितीत्ताजिनि
मातेनहुआत्सधुनिकरि ॥ काचवहुमीवरि ॥ हुहुहुत्तचालवित ॥
॥ ६१ ॥ मंदमंदचालंगोवीद ॥ हुहुचनपुरकरितीशावह ॥ तोजवलि
पातलानंद ॥ हुत्तधरितहारिचा ॥ ६२ ॥ नंदहुत्तभाश्रयकरन ॥ चा
लेवेकुटिचेंनिघान ॥ न्सेवचपउतांजाडवलान ॥ नंदगावत्तनधरित ॥ ६३ ॥

बविरामजाणीजगृजीवन ॥ येकयेकाचाआश्रयंधरन ॥ कंपातका
 पातहोधंजण ॥ उदेनउपर्यनाहुति ॥ हृषि ॥ सवचीआदृतिधरणी ॥ गहा
 गहांहासंचकपाणी ॥ सवेंचउभेराहानि ॥ दुडदुडानाचताती ॥ हृषि ॥
 नंदभाणीयशोहाजननी ॥ मावसा भिक्षाल्यानितींबीनि ॥ चोषभाणी
 चक्रपाणी ॥ नाचतिहोधपाहती ॥ हृषि ॥ लास्यंभाणीतांउव ॥ हान्हि
 न्दसाचेंसाव ॥ तेलास्यंकल ॥ तेहृषितेन्सेतंधवां ॥ हृषि ॥
 करविद्यानितिविधी ॥ वाजवा ॥ तेकरतुंकेकरनि ॥ महेनाचना
 चर ॥ चक्रपाणी ॥ नंहनयनापाहातन्सं ॥ हृषि ॥ हस्तसंकेतहवीकाग
 वंत ॥ न्दसुकरिडालतडालत ॥ मावसागोविनिहसत ॥ हरिपाहत
 याजकड़ ॥ हृषि ॥ वेदितगोविणीनस्कुमारा ॥ लालकमलकणिकासु
 इरा ॥ मध्यश्रीलक्ष्मीमरा ॥ निश्वर्णनियसुयनि ॥ हृषि ॥



सुयोगीं वतीजैसी किणे ॥ किंशषीवेदी तत्त्वागेण ॥ किंसुउद्योगाव
तिरसं ॥ तैसां कांमि निविलसती ॥ ७० ॥ किंदविवेदिलासहस्रन
यन ॥ किंध्रमक्षकी उभानमण ॥ किंगुरवे इतकमध्यात्मन ॥ जग
जीवन तं विशां मां ॥ ७१ ॥ नृत्यकरि लगाइजीवन ॥ मंहहास उद्धारवद
न ॥ तेनृत्यकवादन्तवंस ॥ सकरि यावे प्रयोगिविन्मित ॥ ७२ ॥ विचित्र
कवादाविभाधवा ॥ दशावर ॥ दृंवप्पाव ॥ देवतांसहदीवस
वे ॥ गोलगतेन्हाजाहाल्या ॥ ७३ ॥ नदयन्नाहा गोलिया ॥ नाचति
तेहाध्रमेकरथी ॥ तोजाकान्नाजाथीधरणी ॥ नाचांलागलितध
वा ॥ ७४ ॥ तेजवायुजाथीजल ॥ नाचांलागलुसुरवरनकल ॥
नापं कैलान्निजात्मानिक ॥ अवानिसहितजादर ॥ ७५ ॥ नाच
बैकुंठस्त्वलोक ॥ चक्रसुर्यवापीनायंक ॥ गणगंधर्ववत्सुआटक

The Raivade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Raichur District Library, Raichur, India

तष्ठिमंडलीनुचत्तरे ॥ ७६ ॥ स्वर्गम्भेष्येपाताळ ॥ नाचतीपदुर्द्वालोक
 सकला ॥ नाचतीं पृथ्वीचंन्पाळ ॥ ॥ परिवोरंसितधवां ॥ ७८ ॥ मेन
 पर्वतध्यारथार ॥ वनस्पतीनाचतीभाटराभार ॥ वदशान्त्रंपुराणं
 समग्र ॥ स्वस्थाछंहनाचती ॥ ७९ ॥ नाचतीगोकुछिचिमंदिरं ॥ ना
 चतीउतरडिदेहारं ॥ धारुलुक ॥ करतरं ॥ नाचतीचिसायती ॥
 ॥ ८० ॥ उरवकंजातीमुखकं
 लेंघननिछें केतुकपतं ॥ लेंहा ॥ ८१ ॥ नेदधांवोनजवयी
 आला ॥ स्वणस्कुमानामाज्ञा ॥ सागला ॥ हहईधननिजाकंगीला ॥
 चुंबनदिधलेंतधवां ॥ ८२ ॥ नेदंभनंतजन्मतपकलं ॥ तेयकहासी
 कलासीआलं ॥ किंयचाहेचंसुहृतप्रगटलं ॥ येकहाचियवेळं ॥ ८३ ॥
 याहाघंमातांपिवरि ॥ वोटंतपकलंहिमकादारि ॥ तरिचमाडि



Prachin Shilp
 Prachin Shilp
 Guru Vijay Shilp

वरिश्वीहरि ॥ रात्रंदिवसरेवष्टुत ॥ ८४ ॥ किंसौवारिरकर्तुतिधा
लुनि ॥ दकिलंप्रयांगीत्रिवेणी ॥ तरिचहनिसुनवचुंबनि ॥ वारं
वारपाहति ॥ ८५ ॥ किंसाधिलंपंचानीसाधने ॥ निराहरत्यण
सजंशयन ॥ तरिचत्यासुउठवतु ॥ येशोहानंदनिजति ॥ ८६ ॥
किंमाहानुतुकलंथान ॥ विपुकहतुअजिलाधनामन् ॥ तरिचसं
गोतंघेउनीसवेस्थर ॥ तंददेवाहारवीति ॥ ८७ ॥ किंसत्रमकलं
हनिकिर्तन ॥ किंकेलसत्ता गव्या ॥ तरिचनवपंकजदुष्टन
यन ॥ मितिघालीनिजगङ्गा ॥ ८८ ॥ जात्रेष्वानंदप्राप्तर ॥ तोंजा
लानदाचाकुमर ॥ किंगलियाचेतपतनवर ॥ उचांवेलंब्रह्माडिं ॥ ८९ ॥
जानाकवंवदम्भति ॥ त्यासिगोलगीबोलात्तीकविति ॥ बोबडा
बोलंश्रीपति ॥ सनमाहिततयाचे ॥ ९० ॥ बोलबोलंतषीकशी

(8)

८

९

आर्थनकलं ब्रह्मादिकांसि ।। गोविनिम्हणीद्वच्छासि ।।
 ८१ शुद्धबालणनकलज्जे ॥९१ ॥ द्राष्टव्यायामीनारायण ।। आगणीधं
 वतिदोधंजण ।। चिशादं व्यागकांयउन ।। मिटिघालितीसाह्येय ।।
 ॥९२ ॥ यकगोनसेकसावक्लं यक्कादन्सीद्धरिलं ॥ बलिप्स
 द्वस्यपतेवक्लं ॥ माझ्ञीमातं यक्कादा ॥९३ ॥ द्वच्छाल्यणमाझी
 माय ।। बलिप्सद्वस्यपमाः ॥ द्वच्छाल्यणगंधीमाय बलि
 कम्भ्रासिसागकाहिं ॥९४ ॥ अष्टीप्रहरउगाननराहें ॥ माय
 तील्यणहमाय ॥ द्वच्छाल्याणलुनलाहें ॥ घातलीतहारड
 तच्चि ॥९५ ॥ यक्कादादंहरिनस्त्वदंहिघरन ॥ म्हणमिंजननीदुझि
 चपुणी ॥ मायुतिरवेक्कावयादेवंजण ॥ गटहोबाहर-चालिलं
 ॥९६ ॥ भलेतंकडहोधंधावती ॥ गारीकटकनपाहती ॥ येका

(8A)

Digitized by Ratnadeo Soni, Hodka, Mandal, Dhule and Nageshwanrao Chapekar

सोग्येकपलति ॥ ज्ञाइरवधतिवोटेरो ॥ १७ ॥ मारुंतीहोधं
उटेन ॥ अलेतंकडंजातिधोवान ॥ बलिरामासिम्हयंजग
जीवन ॥ पश्चीधरनीनेउपे ॥ १८ ॥ रोवकागसावया होधं
धावतीधरावया ॥ तोपद्धिजातीउडानियां ॥ द्वापमात्रनल
गतां ॥ १९ ॥ मगउध्वरनकरनि ॥ तटस्तवीलाकितीनय
नी ॥ हृष्णाखणउडानि ॥ पर्वीकाणिनभावधं ॥ २० ॥ हरि
लणमीभाकाशीउडेन ॥ मीयुध्वीचउचलिन ॥
उसेतेश्वरजगहजीवन ॥ श्लाहविती ॥ २१ ॥ सोडिती
वान्हिवसुरं ॥ तउडतिननाविकारं ॥ वस्त्रासानिरव्याउ
डयानिधारं ॥ होधंधंतीयकदा ॥ २२ ॥ वांसरहुबंरती
नानागती ॥ जापणहितेसंचकरिती ॥ वस्त्रेतुकनाच
ती घेघः त्यणतिहोधजया ॥ २३ ॥



जागेबांकिपितीवासुरं ॥ धावतांधापाटकीलित्वे ॥
 तोयेकेबोलबोलवितिचंचरे ॥ यात्सैतस्चवेदालविति ॥ १०४
 धाकुठमेलउनगोपाल ॥ मध्यंत्रामवेंडुरपाल ॥ नववत्सनना
 रवेल ॥ बाललिलेकाननेयां ॥ १०५ ॥ इकडमधुरतकेसचितां
 क्रांत ॥ ल्यणवेनिवाट्टरगामत ॥ अत ॥ जातकानजाउनजाक
 स्मात ॥ वद्युनयईलतय ॥ दी ॥ बाटयावत्व्येणकेसाते
 मिंदिनतुझयाभारिते ॥ वायपंगानपेंथं ॥ जांकस्मातजा
 णीनमि ॥ १०६ ॥ जेसापहीजामिशउचलीत ॥ तेस्ताउडवीणज्या
 कस्मात ॥ किसुधारसघटहरित ॥ उर्गरिषुनजेसा ॥ १०७ ॥
 तेस्सचकरिनतुस्थारात्रुसि ॥ उचलुनजायीनतुजपासी ॥ तु
 णावेतिबलतामानसी ॥ केसरावासेताषल ॥ १०९ ॥

(१०)

वरस्त्रमुशाणहेतुनिगोरविला ॥ उणावर्दवायुरपं चालीला ॥
गोकुलासमिपपातला ॥ वातसुटलभाँडूत ॥ ११० ॥ ईकडेयरा
हाभापलंबंगणी ॥ कउवरिघउनीचक्र पायि ॥ उक्षीवाकली
तेहयी ॥ गौकणीसी बोठत ॥ १११ ॥ जगद्वासामनमाहन
उणावतयेतोजायान ॥ कायन् जगछिकन ॥ डडबहतजा
हाला ॥ ११२ ॥ जउबहुतह ॥ विवहं ॥ येद्वादनरवालीउतरी
ला ॥ हरिउडुडाबाहुर ॥ तोसुटलावतचडंस ॥ ११३ ॥
सुटलाहाप्रवयसमीर ॥ घुकिनेपानलंज्यंवर ॥ त्यामाजिगाकुल
समय ॥ दिसनासजाहुलं ॥ ११४ ॥ यक्षहुतेपरियेत ॥ हुल
कालोऽगरकुलिहोत ॥ दृष्टउन्मलानजात ॥ अकाचामोगी
दिजजैसं ॥ १५ ॥ नदिसंकोम्हीकान्होत ॥ मार्तानोक्तरवं

१०

११

११

आव्यापा।

वावकाते ॥ नेत्रकुननिजहृस्ते ॥ जानजालेंमुच्छित ॥
॥ ११६ ॥ वोठपृथ्वीजोतेंरसातछोते ॥ किंगोकुचउडाले
बाकापंथं ॥ किंगंगनजालेनवालते ॥ आवनिवरिगलंपे
॥ १७ ॥ चुहुकडवहृउजान ॥ पडतीगाकुछासिरिकडकडां
न ॥ मंहिरजातीमेडुन ॥ विहरितेवधयवोते ॥ ११८ ॥
त्रणावतेहरिसउपलुन ॥ उमागगलाघउन ॥ तेजा
णानीमनमाहन ॥ अवरद ॥ तवगाटिलं ॥ १९ ॥ ग्रीवसि
घरिलात्रणावत ॥ श्री ॥ बुद्धाङ्गुत ॥ सिरकमल
आकस्मात ॥ पिलुनलबुडिले करावे ॥ १२० ॥ गोकुछाव
देसीभारप्यात ॥ पडिलत्रणात्रताच्चवत ॥ मागुतीकमच
दलाष्टगोकुछात ॥ व्रवरोलोतधवां ॥ १२१ ॥ वोयताहिला

Digitized by srujanika@gmail.com

आद्वित ॥ लोकजालें सावचित ॥ येद्वाहात्युण लघ्यना
था ॥ कायजालय चुन ॥ २३ ॥ येद्वाहाचहु कडे ॥ जागा
जाकी लघ्या पाहुत ॥ घबघव वहसन्छक बडवित ॥ योर
अंकांतजाहाला ॥ २४ ॥ नंद धांव विद्वाविदि ॥ गोक्षिहुड
कितिसदासदि ॥ येद्वाहासदि ॥ गोक्षिणीचिमि
छलीहाँ ॥ १२४ ॥ गावु ॥ जनसमक्त ॥ बुडाल शाक
समुद्रात ॥ तोडुडुडा ॥ ॥ लघ्यायेतांडुरवीला ॥ २५
मातायेउनघाउनीउचलिला ॥ सधमहद ईजगीला ॥ नंद
गोक्षितंवक्ता ॥ पेनमानेदंधांवती ॥ १२५ ॥ नंदे हरिकेडवरि
घतला ॥ म्हयकाट हातासीबाढा ॥ ईहिरावरमंदिरासभा
ला ॥ साठासाहानंदकरि ॥ १२६ ॥

धावत

(1)

१२५ ॥

॥ १२६ ॥





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com